सहरिया जनजाति के उदीयमान व्यवहार प्रतिमान

दीप्ति सिंह
शोध छात्रा समाजशास्त्र विभाग
श्री अग्रसेन कन्या पी०जी० कालेज, वाराणसी
एवं
डॉ० आभा सक्सेना
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
सामजशास्त्र विभाग
श्री अग्रसेन कन्या पी०जी० कालेज, वाराणसी

सारांश

एक लम्बे समय तक मानव पहाड़ों में भटकता हुआ जानवारों के शिकार और फल-फूल द्वारा अपनी उदरपूर्ति करता रहा है। गुफायें और घने वृक्ष ही इनके आवास थे। कृषि का आविष्कार और पशुपालन का आरम्भ होने से विभिन्न मानव समूहों ने स्थानीय रुप से किसी भू जनजातीय भाग पर रहना आरम्भ कर दिया। लोग आज भी आधुनिक उपलब्धियों से अछूते संस्कृति के वर्तमान स्वरुप से अपरिचित, किसी उद्योग धन्धों, शिक्षा आदि से अनिभिज्ञ घने जंगलों में निवास करते हैं। ऐसे लोगों को भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजाति के रुप में सम्मिलित किया गया है। कुछ समूहों को अपने क्षेत्र में विशेष संसाधन मिल जाने से वे तेजी से आगे बढ़ गये जबकि अनेक मानव समूहों के जंगलों, पहाड़ों और दुर्गम क्षेत्रों में रहने के कारण एक सरल जीवन व्यतीत करते है, इन्हीं सरल समाजों को जनजातीय समाज कहते हैं।

सामान्य रुप से यदि कहा जाये तो हम कह सकते है कि जनजातीय व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है जो एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में निवास करता है, जो किसी आदि पुरुष को अपना उद्गम मानता हैं, जिसकी एक सामान्य संस्कृति होती है और जो आज भी आधुनिक सभ्यता से परे है।

समाज वैज्ञानिकी अक्टूबर-मार्च 2022-23
अंक-35-36, ISSN 0973-4201
भारतीय समाज विज्ञान परिषद्